जमात के साथ नमाज पढना अफ्ज़ाल हैं

संपादक- मौलाना जलील अहसन नदवी रह.

▧ राहे अमल हिन्दी.

☞ नमाज़ बा-जमात अकेले नमाज़ पढने से कई दर्ज़े अफज़ल हैं.

असल हदीस मे "फज्ज" का लफ्ज आया हे जिस्का मतलब हे अलग थलग रहना, जमात की नमाज मे हर तरह के मुसलमान शरीक होते हे. अमीर भी, गरीब भी, अच्छे कपडे पहनने वाले भी और फटे पुराने कपडे पहनने वाले भी, तो जिन लोगो के अन्दर बडाई का घमंड होता हे और मालदारी के नशा मे चूर चूर होते हे इस बात को पसन्द नही करते कि उन्के साथ कोई और खडा हो, इसलिये वो नमाज अपने घरो मे पढते हे. रसूलुल्लाहﷺ ने इस बीमारी का इलाज ये बताया कि जमात के साथ नमाज पढो, अपने कमरे मे या मस्जिद मे अकेले नमाज ना पढो.

फिर ये बात भी हे कि आम तौर से जमात के साथ नमाज पढने मे शैतानी खयालात कम पैदा होते हे और आदमी का अल्लाह से तअल्लुक मजबूत होता हे इस वजह से जमात के साथ नमाज पढने का दर्जा रसूलुल्लाहﷺ के फरमान के मुताबिक 27 गुना बढा हुवा होता हे. [बुखारी, मुस्लीम; अन अब्दुल्लाह बिन उमर रदी, रिवायत का खुलासा]

☞ नमाज़ बा-जमात अफज़ल हैं.

रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया आदमी की नमाज जो किसी दूसरे आदमी के साथ पढता हे ज्यादा इमान की नशवोनुमा की वजह बनती हे, उस नमाज के मुकाबला मे जो वो अकेले पढता हे. और जो नमाज उसने दो आदमियो के साथ पढी वो एक आदमी के साथ पढी गयी नमाज के मुकाबले मे इमान की ज्यादती का सबब बनती हे और फिर जितनी ही ज्यादा तादाद मे लोग पढे तो वो अल्लाह के नजदीक ज्यादा पसन्दीदा हे. (उतना ही अल्लाह से तअल्लुक मजबूत होगा). [अबू दाउद अन अबी बिन कअब रदी, रिवायत का खुलासा]

☞ जमात कायम ना करने का नुक्सान.

इस रिवायत मे ये हकीकत बयान हुई हे कि जमात के साथ नमाज पढने वालो पर अल्लाह की रहमत होती हे और वो उन की हिफाजत करता हे, लेकिन अगर कही जमात कायम ना की जाये तो अल्लाह अपनी हिफाजत और देख भाल का हाथ उन्से खीच लेता हे और वो शैतान के काबू मे चले जाते हे, फिर वो उन्को जिस तरह चाहता हे शिकार करता हे और जिस राह पर चाहता हे चलाता हे जैसे बकरियो का रेवड कि अपने चरवाहे के करीब रहती हे तो वो दोहरी हिफाजत मे रहती हे एक मालिक की हिफाजत और दूसरी वो बकरियो का एक साथ रहना [एकता] इन दोनो वजहो से भेडिया शिकार नही कर पाता. लेकिन अगर कोई बेवकूफ बकरी अपने चरवाहे की चाहत के खिलाफ ज़ुन्ड से निकल कर पीछे रह जाये या आगे निकल जाये तो बहुत ही आसानी से भेडिया उस्का शिकार कर लेता हे, क्योकि अब ये कमजोर भी हे और मालिक की हिफाजत से भी अपने आप को महरूम कर लिया हे. [अबू दाउद अन अबू दरदा रदी, रिवायत का खुलासा]

☞ बगैर किसी वजह से जमात छोडने का अंजाम.

रसूलुल्लाहﷺ फरमाते हे जिस शख्स ने अल्लाह की तरफ बुलाने वाले [मुअज्जीन] की आवाज सुनी और उसे कोई ऐसा बहाना भी नही हे जो उस्की पुकार पर दौड पडने से रोकता हो तो उस्की ये नमाज जो उसने अकेले पढी हे [कयामत के दिन] कुबूल ना की जाएगी. लोगो ने उसपर रसूलुल्लाहﷺ से पूछा कि बहाने का क्या मतलब हे? और कोन कोन सी चीजे बहाना बनती हे? आपने फरमाया डर और बीमारी.

"डर" से मुराद जान चले जाने का डर हे किसी दुश्मन की वजह से या दरिन्दा और साप की वजह से और "बीमारी" से मुराद वो हालत हे जिस्की वजह से आदमी मस्जिद तक नही जा सकता. तेज तूफानी हवा, बारिश और मामूल से ज्यादा सर्दी भी बहाने मे दाखिल हे, लेकिन ठडे मुल्को की सर्दी बहाना नही हे बल्की गर्म इलाको मे कभी कभी ज्यादा सर्दी आ जाती हे और ये उन्के लिये जान लेवा होती हे ऐसी सर्दी बहाना बन सकती हे, इसी तरह उस वकत आदमी को अगर बडे या छोटे इसतिनजा की

जरूरत मेहसूस हो तो ये भी बहाने मे शामिल हे. [अबू दाउद अन इबने अब्बास रदी, रिवायत का खुलासा]

☞ मोमिन और नमाज़ बा-जमात का एहतेमाम

रसूलुल्लाहﷺ के जमाने मे हमारा हाल ये था कि हम मे से कोई नमाज बा-जमात से पीछे नही रहता था सिवाए उस शख्स के जो मुनाफिक था और उस्का निफाक मालूम था और मरीज के अलावा [बल्की उस जमाने के लोगो का हाल ये था] कि बीमारी मे पडे होते फिर भी दो आदमियो के सहारे मस्जिद पोहचते और जमात मे शरीक होते. और अब्दुल्लाह इबने मसउद ने इसी बारे मे फरमाया कि अल्लाह के रसूलﷺ ने हम को सुन्नतुल-हुदा सिखाई सुन्नतुल-हुदा उन सुन्नतो को कहते हे जिन को कानूनी हैसियत हासिल हे और वो उम्मत को करने के लिये बताई गयी हे और सन्नते हुदा मे से वो नमाज भी हे जो उस मस्जिद मे पढी जाये जिस्मे अजान होती हे.

☞ एक दूसरी रिवायत मे ये हे कि उन्हो ने फरमाया कि जिस शख्स को ये बात पसन्द हो कि वो फरमाबरदारी करने वाले बन्दे की हैसियत से कल कयामत मे अल्लाह से मिले तो

उस्को उन पाँचो नमाजो की देख भाल करनी चाहिये और उन्हे मस्जिद मे जमात के साथ अदा करना चाहिये क्योकि अल्लाह ने तुम्हारे रसूलुल्लाहﷺ को सुनने हुदा की तालीम दी हे और ये नमाजे सुनने हुदा मे से हे, और अगर तुम अपने घरो मे नमाज पढोगे जैसे कि ये मुनाफिक लोग अपने घरो मे नमाज पढते हे तो तुम अपने रसूलुल्लाहﷺ के तरीके को छोड दोगे और अगर तुमने अपने रसूलुल्लाहﷺ के तरीके को छोडा तो सीधे रास्ते को खो दोगे. [मुस्लीम अन अब्दुल्लाह बिन मसउद रदी, रिवायत का खुलासा]